रुपया खर्च करने में यह सदन कभी कोताही नहीं करेगा, लेकिन फौज की शक्ति संस्था में नहीं है, उसकी प्रभावशालिता में हैं और उस की वह प्रभावशालिता बढ़नी चाहिए—जमीन पर, आसमान में और समुद्र में। इस पर विचार करते हुए हम यह भी सोचें कि खतरा कहां से है और खतरे का किस तरह से सामना किया जा सकता है।

मगर मुझे अफसोस है, सभापति महोदय, एक बात कह कर मैं खत्म कर दूंगा। वाद-विवाद हो रहा है और प्रधान मंत्री जी सदन में बैठी हुई हैं, उनको बैठना पड़ रहा है, अगर कोई रक्षा मंत्री होता तो शायद वह अपना समय कुछ और महत्वपूर्ण कामों में लगा सकती थीं। 6 महीने हो गये इस देश का कोई रक्षा मंत्री नहीं है···

मैं यह मानने के लिए तैयार नहीं हूं कि कांग्रेस (आई) के पास कोई ऐसा सदस्य नहीं है जो डिफेन्स मिनिस्टर बन सके। मगर अभी तक रक्षा मंत्री नहीं हैं, पूरा समय दे कर काम करने वाला रक्षा मंत्री नहीं है।

मुझ से एक गलती हो गई थी—नरसिंह राव जी यहां बैठे हुए हैं, इस लिए मैं उसका स्पष्टीकरण कर दूं। मैं चुनाव सभा में भाषण देने के लिए उदयपुर गया था। वहां पर मैंने यही मुद्दा उठाया था—मैंने कहा था कि अगर प्रधान मंत्री जी चाहें तो सुखाड़िया जी को रक्षा मंत्री बना सकती हैं। किसी समाचार समिति ने रिपोर्ट दी कि वाजपेयी ने कहा है कि नरसिंह राव को हटा देना चाहिए और सुखाड़िया जी को विदेश मंत्री बना देना चाहिए। मैंने उसका खण्डन किया तो किसी ने छापा नहीं। विदेश मंत्री जी जरूर मुझ से नाराज होंगे, लेकिन मैं चाहता हूं कि देश के पास पूरा समय दे कर काम करने वाला रक्षा मंत्री होना चाहिए। प्रधान मंत्री जी ऊपर से देखभाल करें। (व्यवधान)...

वे तो सारे मंत्रालयों को देख-रेख कर रही हैं। मगर यह पार्ट-टाइम काम नहीं है और देश की रक्षा की समस्याओं को पार्ट-टाइम आधार पर हल नहीं किया जा सकता है।

सभापति महोदय : प्रधान मंत्री एक वक्तव्य देना चाहती हैं।

श्रीमती इन्दिरा गान्धी : मैं आपको तथा माननीय सदस्यों को एक शुभ समाचार देना चाहती हूं।

एस. एल. वी.—३ को अंतरिक्ष में छोड़ने के बारे में वक्तव्य

प्रधान मंत्री (श्रीमती इंदिरा गांधी) : मुझे सभा को सूचित करते हुए प्रसन्नता है कि भारतीय उपग्रह वाहन एस. एल. वी.-3 को आज सुबह 8 बजकर 45 मिनट पर श्री हरिकेता से सफलतापूर्वक छोड़ा गया है। छोड़ने वाले वाहन ने 35 किलोग्राम के भारतीय उपग्रह रोहिणी आर. एस-1 को पृथ्वी के गिद कक्षा में फैंका। हर 10 मिनट में उपग्रह पृथ्वी का चक्कर पूरा करेगा। एल. एच. ए. आर. आज रात पहली बार दो चक्कर देखेगा। उसके बाद हर 12 घंटों के बाद 2 और ऐसे चक्कर नियमित अवधि के बाद देखे जायेंगे।

[प्रधान मंत्री (श्रीमती इन्दिरा गाँधी]

चार चरण वाले ठोस प्रष्पेदन वाहन का विकास भारत में भारतीय वैज्ञानिकों तथा इंजीनियरों ने किया है। एस. एल. वी-3 वाहन का कुल व्यय 20 करोड़ रुपये है और छोड़े जाने के वर्तमान प्रयोग की लागत 1 करोड़ रुपये है। कक्षा में रोहिणी उपग्रह का उद्देश्य मुख्यतः वाहन के कार्य का मापन करना है और इसकी खोजवीन हमारे देश के खोजबीन के केन्द्र कर रहे हैं। अभी तक के संकेतों के अनुसार वाहन तथा उपग्रह दोनों संतोषजनक ढंग से काम कर रहे हैं।

खोजबीन के आंकड़े एकत्र किए जा रहे हैं और उनका विश्लेषण किया जा रहा है।

यह भारत तथा भारतीय विज्ञान की सराहनीय उपलब्धि है, मुझे यकीन है कि सभा अंतिरक्ष विभाग के वैज्ञानिकों तथा तकनीशियनों को बधाई देने में मेरा साथ देगी। राष्ट्र को उन पर गर्व है और उनकी अधिक सफलता की कामना करता है (व्यवधान)

वाजपेयी जी ने सायरन की बात कही थी, इसलिए मैंने उचित समझा कि इस के बारे में इसी समय कह दूं।

श्रीमती विद्यावती चतुर्वेदी (खुजराहो): सभापति महोदय, सबसे पहले मैं आपको धन्यवाद देती हूँ कि आपने रक्षा मंत्रालय की अनुदानों पर, जो बहुत ही महत्वपूर्त्र हमारा मंत्रालय है, मुझे बोलने का मौका दिया है और उसके लिए मैं आपकी आभारी हूं। निःसन्देह इन अनुदानों को समर्थन करने के लिए में खड़ी हुई हूं।

सभापति महोदय, आप को ज्ञात है कि हम.रे वीर सैनिकों ने, हमारी सेना ने हमारे देश में जो ज्वलंत कीर्तिमान स्थापित किए हैं, उनसे हम लोग निःसन्देह परिचित हैं चाहे वह पाकिस्तान की लड़ाई रही हो, चाहे सरगोधा में हवाई अड्डे को उड़ाने की बात रही हो, चाहे अमेरिका से भेजे गए पैटन टैंकों को ध्वस्त करने की बात रही हो और चाहे बंगला देश की आजादी की लड़ाई रही हो, उन्होंने हमारे देश का जो मस्तक ऊंचा किया है, उसके लिए हम उन वीर सैनिकों के आभारी हैं और उनको कोटिशः धन्यवाद देते हैं। आज भी हमारे वे वीर सैनिक, जब शान्ति का समय है, तो भी चाहे हिमालय की ऊंची बर्फीली चोटियां हों, चाहे समुद्र की गहरी तल हो, चाहे रेगिस्तान की उबलती हुई बालू हो और चाहे गगन का विशाल आंचल हो, आज भी अपने देश की आजादी के लिए वे सतर्क रहते हैं, सावधान रहते हैं और हमेशा चिन्तित रहते हैं और उस जन्मभूमि की रक्षा के लिए, जिस जन्मभूमि के लिए हमारे यहां के ऋषियों ने यह कहा हैं :

"जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी"

हमारी जन्मभूमि स्वर्ग से भी बढ़ कर हैं और उसकी रक्षा के लिए वे हमेशा तत्पर रहते हैं। ऐसे हमारे सैनिकों का बल बढ़ाने के लिए, उनकी शक्ति बढ़ाने के लिए, उनका आत्मबल बढ़ाने के लिए, यह जरूरी हो जाता है कि आज के युग की देखते हुए, हमारे पड़ोस में जो मुल्क हैं, उनमें जो नजदीक के मुल्क हैं, उनमें जिस तरह की गतिविधियां हो रही हैं, उन सबको देखते हुए यह बहुत जरूरी हो जाता है कि हम अपने सैनिकों के हाथों में आधुनिकतम से आधुनिकतम अस्त्र दें, आधुनिक से आधुनिक साधन हम उनको मुहैय्या करें ताकि उनकी शक्ति बढ़े, उनका आत्मविश्वास बढ़े। आज मुझे यह कहने में कोई